8 से 14 वर्ष के 35 प्रतिशत स्कूली छात्र फेफड़े की बीमारी से ग्रस्त

गूगल ब्वाय कौटिल्य करेगा प्रदूषण के प्रति जागरूक

खुले वाहनों का प्रयोग करने वाले बच्चों का जोखिम ज्यादा

नई दिल्ली, 4 मई (ब्यूरो): राजधानी में बढ़ रहा प्रदूषण बच्चों की सेहत पर खराब असर डाल रहा है। ब्रीदब्लू सर्वे के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, रिक्शे और खुली गाड़ियों में स्कूल जाने वाले बच्चों में प्रदूषण की वजह से फेफड़े की समस्याएं बढ़ रही हैं। संगठन की ओर से स्वच्छ भारत मिशन में स्वच्छ हवा जोड़ने के उद्देश्य से एक मुहिम की शुरूआत करने जा रहा है, जिसमें गूगल ब्वाय कौटिल्य को जोड़ा जाएगा। सर्वे की मानें तो 8 से 14 वर्ष के 35 प्रतिशत स्कूली छात्र फेफड़े की बीमारी से ग्रसित हैं। इसमें देशभर के 8 से 14 साल की उम्र के 2000 स्कूली बच्चों को शामिल किया गया।

सर्वे के अनुसार, तकरीबन 35 प्रतिशत स्कूली बच्चों लंग हैल्थ स्क्रीनिंग टैस्ट में (एलएचएसटी) फैफड़ों की बीमारी से ग्रसित पाए गए हैं। टैस्ट में उनके फेफड़े बहुत कमजोर पाए गए हैं। दिल्ली में 21, बैंगलुरु 14, मुंबई 13 और कोलकाता के नौ फीसदी बच्चों में तो यह स्थिति चिंताजनक है। सर्वे के बाबत डा. प्रितेष कौल ने कहा कि फेफड़ों के स्वास्थ्य की जांच में फेफड़ों से जुड़ी बीमारियों व गंभीरता का पता लगाया गया। सर्वे में यह खुलासा हुआ कि बंद वाहनों के मुकाबले खुले वाहनों में जाने वाले बच्चे धूल और हवा में मौजूद कणों से ज्यादा प्रभावित होते हैं।

अकेले दिल्ली में ही 92 फीसदी बच्चे खुले वाहनों का प्रयोग करने वाले बच्चों के फेफड़ों के परिणाम बहुत खराब पाए गए, जबकि बंद परिवहन इस्तेमाल करने वाले बच्चों का आंकड़ा महज 8 प्रतिशत था। वल्लभभाई पटेल चैस्ट इंस्टीच्यूट के डा. राज कुमार ने कहा कि कि वायू प्रदूषण की वजह से फेफड़ों की बीमारी से पहले से ज्यादा लोग ग्रसित होने लगे हैं।

दमे की बीमारी को नजरअंदाज न करें

इंडियन मैडीकल एसोसिएशन (आईएमए) ने विश्व दमा दिवस के पूर्व संध्या पर आयोजित एक कार्यक्रम में दमे को नजरअंदाज नहीं करने की अपील किया। सोसिएशन के मुताबिक, 40 उम्र के बाद अस्थमा के पहले अटैक को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

यह बातें है काम की

- दमे में हमेशा सांस फूलने वाली खांसी नहीं होती।
- महज खांसी हो तो वह दमे का लक्षण हो सकती है।
- एक महीने में एक रात में 2 बार दमे का दौरा पड़ने या एक हफ्ते में दिन में 2 बार दमे का दौरा पड़ने पर नियमित रूप से दमे के इलाज की जरूरत है।
- एलर्जी पैदा करने वाले घरेलू तत्वों में धूल के कण, जानवरों के बाल या त्वचा कण, फफूंदी, चूहे और कॉकरोच आदि शामिल हो सकते हैं।
- दमे के मरीजों में पेट की गड़बड़ी आम पाई जाती है। इसकी संभावना 30 से 90 प्रतिशत तक होती है।
- दमे के सभी मरीजों को व्यायाम करते वक्त अपने पास रैपिड-एक्टिंग बीटा एगोनिस्ट अपने पास रखना चाहिए।

Navoday Times (Delhi Edition)
5th May 2015